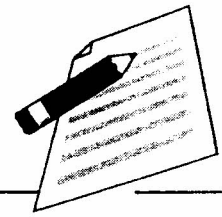32

अवधारणा और विशेषताएं

हम सभी, प्राय:, विभिन्न वस्तुओं को अलग-अलग स्थितियों में स्पष्ट या व्यक्त करने के लिए स्वच्छन्दतापूर्वक 'संस्कृति' शब्द का प्रयोग करते हैं। कभी-कभी उच्च वर्गीय लोगों की जीवन-शैली को 'संस्कृति' कहते हैं और कभी कुछ लोगों को 'असंस्कृत' बताते हैं जिसका भाव 'उद्धत' अथवा अशिष्ट होता है। 'समाजशास्त्र' में 'असंस्कृत' नाम का कोई शब्द नहीं है क्योंकि उसकी दृष्टि में हर मानव की संस्कृति अर्थात जीवन-शैली अपनी निजी प्रकार की होती है। संस्कृति व्यक्तियों को साथ-साथ जोड़कर रखती है और एक समूह में बनाए रहती है तथा उन्हें अन्य लोगों से पृथक या अलग पहचान प्रदान करती है। हमारी संस्कृति हमें 'भारतीय' बनाती है और अमेरिकन (अमरीकी) अथवा जर्मन लोगों से अलग पहचान देती है। इस भांति, संस्कृति एक समाज या समूह को निजी पहचान दिलाने वाला तत्व है। कुछ निश्चित पदार्थों के उत्पादों के माध्यम से भी संस्कृति की पहचान होती है। यह भाषा, धर्म, अर्थ-व्यवस्था और राजनैतिक प्रणाली इत्यादि से भी जानी पहचानी जाती है। संस्कृति एक जीवन-पद्धति है जो एक ही जन-समुदाय में समान प्रकार की होती है। इसके अंतर्गत एक जन-समुदाय की आस्थाएं, विश्वासों, अभिवृत्तियाँ आपसी समझ और व्यवहार के तौर-तरीकों के एकत्रित स्वरूप आते हैं। उनसे हमें एक दूसरे को समझने में आसानी होती है। इस पाठ में, आप संस्कृति, इसकी धारणा और इसके चारित्रिक गुणों (विशेषताओं) के विषय में और अधिक पढ़ेंगे।

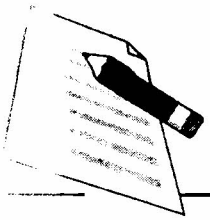

Notes

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप:

- संस्कृति की परिभाषा बता सकेंगे;
- संस्कृति की धारणा को समझ सकेंगे; और
- संस्कृति की विशेषताओं को पहचान सकेंगे।

32.1 संस्कृति की परिभाषा

संस्कृति हमारी अस्मिता और अस्तित्व का अभिन्न अंग है। तथापि, यह विभिन्न समाजों में अलग-अलग होती है। हम संस्कृति को निम्नांकित उदाहरणों द्वारा और अच्छी तरह समझ सकते हैं। जैसे- जब कभी हम अपने किसी रिश्तेदार या मित्र से मिलते हैं, तो दोनों हाथ जोड़कर 'नमस्कार' करते हुए अभिवादन करते हैं। यह भारतीय संस्कृति की एक खासियत है। पश्चिमी समाजों में अपने मित्रों और रिश्तेदारों का अभिवादन करने के लिए भिन्न-भिन्न तरीके जैसे हाथ मिलाना, गले मिलना और चुंबन करके मिलना प्रचलित है।

अब हम संस्कृति की परिभाषा करें तो सबसे अधिक स्वीकृत, प्रचलित और आसान परिभाषा यह है "संस्कृति मानव द्वारा, समाज के एक सदस्य के रूप में, अर्जित ज्ञान, विश्वासों, आस्थाओं, कला-कौशलों, आचार-विचारों, कानूनों, रीति-रिवाजों तथा अन्य क्षमताओं का एक समग्र-जटिल स्वरूप है।"

इस परिभाषा से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि संस्कृति में सीखने और सिखानें दोनों की क्षमताएँ निहित हैं। दूसरे शब्दों में एक समूह का हर व्यक्ति क्षमताएँ सिखलाता और सीखता है। सीखने और सिखाने की प्रक्रियाएँ एक संस्कृति से दूसरे संस्कृति, एक समूह से दूसरे समूह और एक स्थान से दूसरे स्थान में भिन्न-भिन्न होते हैं।

फिर भी, ये प्रक्रियाएँ कुछ सामान्य मानव-व्यवहार और क्रियाओं - जैसे भवन-निर्माण, भोजन-उत्पादन और तैयार करने, वस्त्रों, भाषा आदि पहलुओं पर केन्द्रित किए जा सकते हैं। भोजन-उत्पादन तथा भोजन बनाने की विधि, भवनों का ढाँचा, पहनावा, बोलने के ढंग और वार्तालाप इत्यादि उन लोगों की संस्कृति- समूह और स्थान के अनुसार भिन्न-भिन्न होती हैं।

प्राकृतिक मानव द्वारा निर्मित परिवेश (वातावरण) के साथ तालमेल रखने की योग्यता व्यक्ति की क्षमता को प्रदर्शित करती है।

मानव × परिवेश (वातावरण) = संस्कृति

32.1.1 संस्कृति की धरणा

संस्कृतिः जैसा कि पूर्व में बताया गया है संस्कृति वह जीवन-पद्धति है जो एक समूह में समान रूप से मौजूद होती है। आओ अब हम संस्कृति पर काल और स्थान की परिधि में विचार करें।

काल/समयबद्धताः शीतकाल में गर्म वस्त्रों का पहनना और बरसात के मौसम में छतरी लेकर चलना, आदि एक वर्ष की छोटी कालावधि में मानव के व्यवहार में परिवर्तन के उदाहरण हैं। काफी लंबे समय के बाद संस्कृति में कुछ नये तत्वों के समावेश के कारण व्यवहार के तौर-तरीकों में परिवर्तन होता है। उदाहरण के लिए, लगभग दो सौ वर्ष पूर्व रेलें नहीं थीं और सौ वर्ष पहले हवाई जहाज नहीं थे। पच्चीस वर्ष पहले लोग कम्प्यूटर नहीं जानते थे जैसे कि आज उपयोग कर रहे हैं। इन सभी आविष्कारों ने मानवीय जीवन-पद्धति को इस सीमा तक प्रभावित किया है कि इनके बिना आधुनिक जीवन पद्धति असंभव प्रतीत होती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि काल या समय लोगों के सांस्कृतिक निर्माण का एक नियामक तत्व है।

दोनों कलाइयां ऊपर उठाकर एक व्यक्ति दूसरे का अभिवादन करते हुए।

स्थानबद्धताः बहुत समय बाद मिलने पर हम अपने मित्रों का अभिवादन करते हैं। फिर भी अभिवादन का स्वरूप, संस्कृति और स्थान की भिन्नता के अनुसार,

अलग-अलग होता है। भारतीय लोग दोनों हाथ जोड़कर अभिवादन करते हैं, अंग्रेज हाथ मिलाकर, और तिकोपियाए पालीनेशिया द्वीप के निवासी परस्पर ऊपर को उठी हुई कलाइयों को थामकर अभिवादन करते हैं जो बाहर के व्यक्ति को झगड़े की मुद्रा जैसी लगती है। इस तरह स्पष्ट है कि मानवीय व्यवहार स्थान की भिन्नता के अनुसार भिन्न-भिन्न होता है।

संस्कृति के दो व्यापक घटक होते हैं: एक 'भौतिक' और दूसरा 'अ-भौतिक। भौतिक भाग में वे सभी वस्तुएं सम्मिलित हैं जो समाज में मानव द्वारा निर्मित, परिवर्तित और परिवर्धित हुई है, जैसे- हल, हँसिया, फावड़े, गेंतियां आदि जो स्पष्ट दिखाई देती हैं।

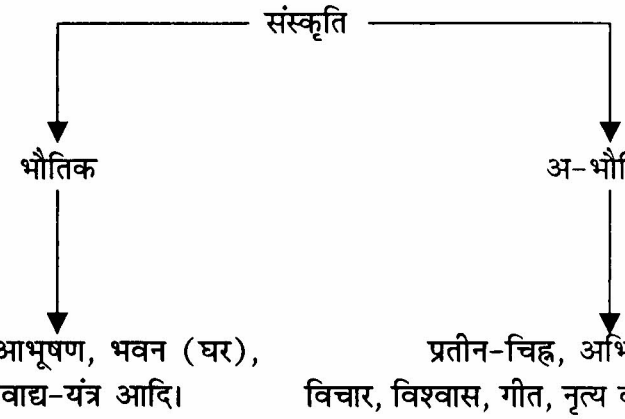

यदि हम निकट से देखें तो पाते हैं कि जिन लोगों का कृषि प्रमुख व्यवसाय है उनके खेती के औजार भी एक समान नहीं होते। पर्वतीय क्षेत्रों में हलों के वजाय कुदाली का प्रयोग होता है। इससे पता चलता है कि समाज की संस्कृति को नियंत्रित करने में वातावरण की बहुत बड़ी भूमिका होती है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि वातावरण के अनुसार मानव के परस्पर व्यवहार की भौतिक प्रस्तुति ही संस्कृति है। परिवेश या वातावरण हर जगह एक जैसा नहीं होता। यह हर जगह अलग-अलग होता है। अतः एक स्थान से दूसरे स्थान की संस्कृति भी परिवेश के परिर्वतन के साथ बदल सकती है।

आइए, अब हम संस्कृति के अभौतिक पहलुओं की चर्चा करें। अभौतिक संस्कृति में प्रतीक-चिह्न, विचार आदि सम्मिलित होते हैं जो परस्पर संबंधों के क्षेत्र में मानव-जीवन को टालते का काम करते हैं। इनमें से सबसे अधिक महत्वपूर्ण होती है मानवीय अभिवृत्तियाँ, मानवीय आस्थाएँ, नैतिक मूल्य और आदर्श। उदाहरण के लिए- विश्वास और आस्थाओं का धार्मिक पद्धतियों पर प्रभाव पड़ता है। मुसलमान लोग एक माह (जो रमजान का महीना माना जाता है) तक उपवास करते हैं। इस अवधि में वे दिन में केवल एक बार शाम को चंद्रमा के दर्शन करने के बाद ही भोजन करते हैं। रमजान

के आखिरी दिन, एक इस विशेष मीठी वस्तु को खाकर उपवास तोड़ते हैं जो अपने आस-पड़ौस के नजदीकी व्यक्तियों में बाँटी जाती है। उसी भांति, जीवन के विभिन्न अवसरों और स्तरों पर भोजन संबंधी विश्वास, आस्थाएँ और प्रतिबंध, हमारी भोजन करने संबंधी आदतों, आचार-विचारों तथा खान-पान को संचालित करते हैं। उदाहरण के लिए, उड़ीसा के लोग 'कार्तिक' मास में सामिष-भोजी पदार्थों (मांसाहार) के भोजन पर पाबंदी रखते हैं। ऐसा विश्वास है कि इस मास में मांसाहार से परहेज विभिन्न बीमारियों से दूर रखता है और सामान्य रूप से स्वस्थ रहने में मदद करता है। अ-भौतिक संस्कृति का दूसरा उदाहरण नवरात्रि के अवसर पर उत्तर भारतीयों में भोजन पर नियंत्रण के रूप में देखा जाता है। ज़ननी का शिशु के जन्म के बाद चालीस -चालीस दिन तक विश्राम करना, रसोईघर में बिना चप्पल के प्रवेश करना आदि संस्कृति के अभौतिक पहलू के उदाहरण हैं। इनमें से अनेक ऐसे आचार-विचारों के वैज्ञानिक आधार भी पाए गए हैं। उदाहरणत: लगभग प्रत्येक रीति-रिवाज और भोजन के पकाने में हल्दी का प्राय: उपयोग इसके छूत से बचाव के गुण से जोड़ा हुआ बताया जाता है। भारत में लगभग सभी समुदायों में इसका समान रूप से प्रचलन है।

पाठगत प्रश्न 32.1

'अ' और 'ब' वर्गों का उपयुक्तानुसार मिलान कीजिए:

'अ'	'ब'
1. संस्कृति का संबंध	1. भौतिक और अभौतिक दोनों पहलुओं से होता है।
2. भवन (घर), एक हल, एक साइकिल इत्यादि	2. एक जीवन-पद्धति होती है।
3. ज्ञान, आस्थाएँ, कला-कौशल आचार-विचार, कानून और रीति -रिवाज, प्रथाएँ आदि	3. भौतिक संस्कृति के उदाहरण हैं।
4. प्रत्येक संस्कृति	4. अभौतिक संस्कृति के उदाहरण हैं।

32.2 संस्कृति की विशेषताएँ

अब हम संस्कृति की अति सामान्य और महत्त्वपूर्ण विशेषताओं का विवेचन करते हैं। वे हैं:-

Notes

1. संस्कृति सार्वभौमिक होती है।
2. संस्कृति स्थिर, टिकाऊ और गतिशील होती है।
3. संस्कृति एक सीखा हुआ व्यवहार है।

(अ) संस्कृति सार्वभौमिक है: एक उड़िया परिवार बेंगलूर में रहता था। एक बार शाम को जब वे चपाती और दाल का भोजन कर रहे थे तो एक तेलुगु भाषी महिला उनके घर आई। उसे उड़िया परिवार को चावल के स्थान पर चपाती खाते देखकर अति आश्चर्य हुआ। वास्तव में उसके लिए शाम के भोजन में चावल अनिवार्य होता है। यह सोचकर कि उड़िया परिवार के पास (शायद) चावल नहीं रहा है उसने उन्हें आवश्यक तादाद में चावल देने की पहल की। उसके इस आग्रह पर उड़िया परिवार ने कहा कि बात ऐसी नहीं है कि हमारे पास चावल नहीं है बल्कि वे रात्रि के भोजन में चपाती खाने के अभ्यस्त हैं। यह उदाहरण बताता है कि भोजन के सार्वभौमिक होते हुए भी लोग क्या खाते हैं, कैसे इसे पकाते और परोसते हैं आदि। एक समुदाय से दूसरे में भिन्न होता है। संस्कृति सार्वभौमिक और विशिष्ट या व्यक्तिगत दोनों हैं।

मानव की संस्कृति के निर्माता प्राणी के रूप में धारणा संस्कृत को विश्वव्यापी बनाती है और इसे समस्त मानव-समुदाय की एक खासियत बना देती है। सभी मानव अपने जीवन को बनाए रखने के लिए अपने प्राकृतिक वातावरण को अपने अनुकूल बनाने की तकनीक जानते हैं। भोजन-उत्पादन और अपने लोगों में बाँट लेने के तौर-तरीके भी उनके पास है। सभी की निजी संस्थाएँ होती हैं, जैसे परिवार और दूसरे निकट-सम्बन्धियों के समूह आदि। सभी लोगों के पास एक प्रकार के राजनीतिक नियंत्रण और कानून एवं न्याय के अनुरूप न्याय संगत बनाने के तौर तरीके तथा प्रणालियाँ होती हैं। कला-कौशल की विभिन्नताओं के रूप में उन सभी के पास गीत, नृत्य तथा कहानियाँ मौजूद हैं। अपने भावों के संप्रेषण के लिए सभी की अपनी-अपनी भाषाएँ हैं।

पाठगत प्रश्न 32.2

निम्नांकित में से सही पर सही (✓) का निशान और गलत पर गुणा (×) का निशान लगाइए:

1. संस्कृति सार्वभौमिक नहीं है।
2. संस्कृति स्थानबद्ध होती है।
3. एक संस्कृति दूसरे संस्कृति से एक समान होती है।
4. संस्कृति की सार्वभौमिकता मानवीय अस्तित्व का अभिन्न अंग है।

(ब) संस्कृति, स्थिर, टिकाऊ और गतिशील है: संस्कृति समय सापेक्ष होती है। यह समय के अनुरूप बदलती है। दूसरे शब्दों में, यह सतत प्रवाहमान है। संस्कृति की तुलना एक बहती हुई सरिता से की जा सकती है। जिस प्रकार नदी बहती चली जाती है तो एक स्थान पर नदी में बहता हुआ पानी आगे जाता रहता है और उसके स्थान पर दूसरा प्रवाह आ जाता है। यद्यपि नदी यथावत और शाश्वत बनी रहती है। वही संस्कृति भी है। विषय व तत्व बदलते हैं, सुधरते हैं, रूपान्तरित होते हैं और इसी भांति संस्कृति की सरिता प्रवाहित होती चली जाती है। यह एक निरन्तर परिवर्तन की प्रक्रिया है और यही सततता संस्कृति को प्रगतिशील एवं गतिशील बनाती है। संस्कृति में परिवर्तन इतनी मुस्तैदी से और चुपके-चुपके आता है कि हम तब तक इसे भाँप भी नहीं पाते जब तक कि हम वर्तमान को भूत पर आरोपित होता नहीं देख लेते। हम अपनी तस्वीर का उदाहरण ले लें। वर्तमान का खींचा गया आपका फोटो का मिलान यदि कुछ वर्षों पूर्व के फोटो से मिलान करें तो आपको संस्कृति में परिवर्तन का आभास हो जाएगा, चाहे वह बालों के स्टाइल के बारे में हो या कपड़ों के डिजाइन के विषय में हों। इन वर्षों में वस्त्रों के पहनावे और बालों के स्टाइल किस तरह बदले हैं, इस बात का इससे हम पता लगा सकेंगे। अपने दैनिक जीवन में हम ऐसे अनेक परिवर्तन देखते हैं। वर्षों पूर्व हमारे समाज में कन्याओं की शिक्षा को प्रोत्साहन नहीं मिलता था जबकि कम उम्र में ही उनकी शादी कर देने पर बहुधा जोर दिया जाता था। लड़कियाँ घरों में पढ़ती थी,और घर गृहस्थी का कार्य सीखती थीं जब तक कि उनकी सगाई और शादी नहीं हो जाती। पिछले कुछ वर्षों से लड़कियां घर की चारदीवारी से बाहर औपचारिक शिक्षा ही नहीं बल्कि उच्च शिक्षा के लिए भी निकल रही हैं। आजकल, अनेक युवा लड़के और लड़कियां अपने-अपने जीवन-साथी चुनने के लिए स्वतंत्र हैं। इस तरह हम अपनी संस्कृति में कुछ न कुछ नया परिवर्तन देख रहे हैं जबकि इस तरह हम देखते हैं कि हमारी संस्कृति में एक तरफ कुछ नया जुड़ा तो दूसरी तरफ कुछ तत्व प्रचलन से हट गए। इस तरह संस्कृति सदा परिवर्तनशील रहती है।

अब हम कह सकते हैं कि संस्कृति स्थिर, टिकाऊ किन्तु सर्वदा सतत् परिवर्तनशील होती है। एक अन्य उदाहरण से भी यह बात स्पष्ट हो जाएगी। हर जगह शादी-विवाह हुआ करते हैं। किंतु विवाह-पद्धति तथा वैवाहिक प्रथाओं से संबंधित रीति-रिवाज तथा चलन धीरे-धीरे बदल रहे हैं। गुजराती परिवारों में वर्तमान समय और कुछ पीढ़ियों पहले प्रचलित वैवाहिक पद्धतियों के अध्ययन से, उन परिवर्तनों के विषय में अच्छी जानकारी मिल सकती है। अतएव, यह स्पष्ट है कि संस्कृति स्थिर एवं टिकाऊ है तथापि यह गतिशील भी है।

पाठगत प्रश्न 32.3

सही शब्द चुनिए और उपयुक्त शब्दों द्वारा खाली स्थान भरिए।

(अ) संस्कृति ..... है।

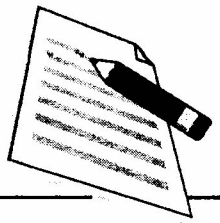

Notes

(ब) संस्कृति स्थान और ..... है।

(स) संस्कृति में परिवर्तन ..... होते हैं।

(द) संस्कृति सदा ..... है।

(स) संस्कृति एक सीखा हुआ व्यवहार है

जब आप दूसरों का अभिवादन करते हो तो दोनों हाथ जोड़ लेते हो। पर क्या आपने कभी नवजात शिशु को भी अन्य लोगों को अभिवादन करने के लिए हाथ जोड़ते देखा है? दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि हमने 'नमस्कार' करने के साथ अभिवादन का तरीका सीखा है क्योंकि हमने अन्य लोगों को इसी तरह अभिवादन करते देखा है अथवा हमारे बड़े-बूढ़ों ने हमें ऐसा ही सिखाया है। पर क्या कोई व्यक्ति एक कौवे को अपना घोंसला बनाना बता या समझा सकता है? बया पक्षी भी अपना घोंसला स्वयं बुनते हैं। इन पक्षियों ने अन्य पक्षियों से घोंसला बनाने की तकनीक नहीं सीखी है। इन्होंने अपने माता-पिता से यह गुण आनुवंशिकता के रूप में पाया है। मानव ऐसा कोई सामाजिक-सांस्कृतिक गुण अपने माता-पिता से उत्तराधिकार में अर्जित नहीं करता है। उन्हें अपने परिवार, समुदाय और समाज, जहां वे रहते हैं, के संदस्यों से इसे सीखना पड़ता है। इस तरह संस्कृति एक सीख या ज्ञान पर आधारित व्यवहार है और यह न तो वंशानुगत अर्जित है और न यह एक मूल प्रवृत्ति परक सहज व्यवहार है। यह मानव द्वारा उस समाज से सीखा या अर्जित किया जाता है जिसमें कि वह पाला-पोसा जाता है। परिणामतः मानव समाज के लिए संस्कृति अनुपम और अतुलनीय है। एक पीढ़ी द्वारा प्राप्त ज्ञान को आने वाली पीढ़ी को एक प्रक्रिया जिसे 'संस्कार' कहते हैं, के द्वारा हस्तान्तरित किया जाता है।

संस्कारीकरण बिना औपचारिक शिक्षा के चलने वाली एक सहज प्रक्रिया है। यह अपने समाज का सदस्य बनने के अपनी संस्कृति को सीखने की प्रक्रिया है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो एक समाज से दूसरे समाज में भिन्न-भिन्न होती है। संस्कारीकरण संस्कृति के सभी पहलुओं के शिक्षण और अध्ययन की सतत प्रक्रिया है। यह न तो शारीरिक (भौतिक) क्रियाओं जैसे भोजन, वस्त्रों आदि तक (सीमित है) और न ही हमारे द्वारा बोली जाने वाली भाषा तक ही सीमित है। इसमें नैतिक मूल्य, आदर्श, अभिवृत्तियाँ, नैतिकता एवं मानसिक तथा शारीरिक दोनों प्रकार की हर वस्तु सम्मिलित होती है। संस्कृति की शिक्षा जन्म से प्रारंभ होती है तथा संपूर्ण जीवन भर सतत् चलती रहती है। भारत में एक भारतीय माता-पिता से पैदा हुए बच्चे यदि बचपन से ही अलग वातावरण या परिवेश में संस्कारित किए जाते हैं तो वे पृथक संस्कृति सीखते या अपनाते हैं। अतः यह ध्यान देने योग्य है कि संस्कृति एक सामूहिक धरोहर है व्यक्तिगत नहीं। यह समाज या उन लोगों से संबंधित होती है जिनका एक समान जीवन-शैली होता है और जो सतत् सीखने की प्रक्रिया में संलग्न होते हैं।

पाठगत प्रश्न 32.4

निम्नांकित में से जो सही है उसके सम्मुख 'सत्य' लिखिए और गलत को सुधारिए:

1. संस्कृति आनुवंशिक रूप से अर्जित होती है।
2. संस्कृति एक सीखा हुआ व्यवहार है।
3. समाज का सदस्य होने के लिए अपनी संस्कृति को सीखना संस्कारीकरण कहलाता है।
4. समस्त मानव जाति के लिए संस्कृति अनुपम है।

आपने क्या सीखा

- एक जन-समूह द्वारा अपनाई गई जीवन-शैली का समग्र रूप संस्कृति होता है। यह एक जन-समूह को संगठित करती है। एक से दूसरे समूह की भिन्नता को स्पष्ट करती है।
- हमने यह भी सीखा है कि संस्कृति सार्वभौमिक होती है और समय एवं स्थान के सापेक्ष होती है। अर्थात काल तथा स्थानानुसार बदलती है।
- काल और स्थान के आयाम संस्कृति को प्रगतिशील एवं गतिशील बनाते हैं और संस्कृति मानव द्वारा निर्मित होती है।
- यह भी ज्ञात हुआ है कि संस्कृति एक सीखा हुआ व्यवहार है क्योंकि मानव अपनी संस्कृति से सीखत है। इस भांति हम कह सकते हैं कि संस्कृति एक ऐसी जीवन-शैली निर्धारित करती है जिसके बिना जीना कठिन होता है। एक अन्य उदाहरण द्वारा आप और स्पष्ट रूप से समझ पाएँगे। जब हम किसी अन्य देश की यात्रा करते हैं तथा दूसरी जीवन-शैली में रहने को विवश होते हैं तो हमें बहुत असुविधा का अनुभव होता है। एक अलग सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के होते हुए उसे पीछे छोड़ना तथा एक नवीन सांस्कृतिक परिवेश को अपनाना बहुत कठिन सा लगता है। यह इसलिए होता है क्योंकि सभी संस्कृतियाँ समान नहीं हैं। एक स्थान से दूसरे स्थान में भिन्न-भिन्न होती है।
- प्रत्येक समाज की अलग-अलग संस्कृति होती है अथवा हम कह सकते हैं कि संस्कृति भिन्न-भिन्न समाजों में भिन्न-भिन्न होती है।
- एक अन्य ध्यान देने योग्य पहलू यह है कि प्रत्येक संस्कृति में भाषा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। अन्ततः हमारी संस्कृति हमारे संपूर्ण जीवन, सोच-विचार तथा व्यवहार को प्रकट करती है।

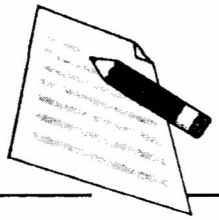

पाठान्त प्रश्न

1. आशय स्पष्ट कीजिए:

(अ) संस्कारीकरण (ब) संस्कृति

2. संस्कृति की परिभाषा लिखिए और उसकी दो प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
3. संस्कृति की अवधारणा पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
4. 'संस्कृति एक सीखा हुआ व्यवहार है'। उपयुक्त उदाहरण देकर इस कथन की पुष्टि कीजिए।

शब्दावली

संस्कृति : एक जन-समूह द्वारा अपनायी जाने वाली जीवन-शैली है जिसमें भौतिक और अभौतिक दोनों पहलू शामिल होते हैं।

प्रगतिशील/गतिशील: जो स्थिर न हो। संस्कृति के संदर्भ में यह सतत् परिवर्तनशील होते हैं और ये परिवर्तन समय और स्थान के सापेक्ष होता है।

संस्कारीकरण : एक समाज का सदस्य होने के लिए अपनी संस्कृति को सीखने की सतत प्रक्रिया 'संस्कारीकरण' होती है।

निषेध : वे प्रतिबंधा / रोक जो समाज द्वारा स्वीकृत नहीं हैं।

प्रवाह : परिवर्तनों की सततता अथवा निरंतर प्रवाहमानता।

सार्वभौमिक: जो प्रत्येक मानव समुदाय में विद्यमान है।

अर्जित : जो परंपरा से प्राप्त न हो अपितु एक समय में प्रयत्न द्वारा प्राप्त की गयी हो।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

32.1

अ	ब
1	1
2	3
3	4
4	2